CBSE X	MT EDUCARE LTD.	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - B**	
	SEMI PRELIM - II	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

	खण्ड: 'क'	
A.1.		
(क)	पहला भाग है उत्तरी भाग, जो हिमालय के दक्षिण से लेकर विंध्याचल के उत्तर तक फैला हुआ है । दूसरा भाग है दक्खिनी प्लेटो (पठार) जो विंध्य से लेकर कृष्णा नदी के उत्तर तक का भाग है । तीसरा भाग प्रायद्वीप जैसा है जो प्लेटो के दक्षिण, कृष्णा नदी से लेकर कुमारी अंतरीप तक का भाग है ।	**2**
(ख)	विविधता का सबसे बड़ा लक्षण है - अनेक भाषाओं का होना । इसके कारण उत्तर भारत के लोगों को दक्षिण में तथा दक्षिण भारत के लोगों को उत्तर भारत में कठिनाई होती है ।	**2**
(ग)	भारत के संविधान में स्वीकृत सभी भाषाओं के मध्य एक ही भावधारा बहती है । रामायण और महाभारत को लेकर सभी भाषाओं में अद्‌भुत एकता है । संस्कृत और प्राकृतभाषा का साहित्य इनमें जड़ की तरह काम कर रहा है ।	**2**
(घ)	अनेकता, बाहर ।	**1**
(ङ)	विविधता में एकता ।	**1**
A.2.		
(क)	कवि प्रेरणा देता है कि साथी की मृत्यु के कारण अपने जीवन को सूना तथा निराशामय बनाने की आवश्यकता नहीं है । मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन को आनंदमय बनाने के लिए कोई अन्य प्रिय साथी खोज ले ।	**2**
(ख)	यहाँ इसका अर्थ है - अपनी अकेली, सूनी, वीरान जिंदगी को आनंदमय बनाने के लिए कोई अन्य योग्य साथी खोज लेना चाहिए ।	**2**
(ग)	कवि के साथी आपस में गहरा लगाव रखते थे । वे एक-दूसरे के दिल में समाए हुए थे ।	**2**
(घ)	कवि के अपने साथियों के साथ बड़े प्रेम और आनंद से दिन कटे ।	**1**
	खण्ड: 'ख'	
A.3.		
(क)	वर्णों के मेल से बना स्वतंत्र सार्थक ध्वनि समूह 'शब्द' कहलाता है। जब वही शब्द व्याकरणिय नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तब वही शब्द पद बन जाता है।	**2**
(ख)	(i) जब तक शिक्षक रहता है, सब शांत रहते हैं ।	**1**
	(ii) जब बादल घिर आए तो वर्षा होने लगी ।	**1**
	(iii) शीला बाजार गई और पुस्तक खरीद लाई ।	**1**

A.4.		
(क)	(i) पराधीन - तत्पुरुष समास	**1**
	(ii) त्रिवेणी - द्विगु समास	**1**
(ख)	(i) नवरात्र - द्विगु समास	**1**
	(ii) गजानन - बहुब्रीहि समास	**1**
A.5.		
(क)	(i) यहाँ पर कल एक लड़का और लड़की बैठे थे ।	**1**
	(ii) मोहन घर गया और सो गया ।	**1**
	(iii) तुम सबसे सुन्दर हो ।	**1**
	(iv) देश में सर्वत्र शांति है ।	**1**
(ख)	(i) **आग में घी डालना** - क्रोध को भड़काना । तुम्हारी बातों ने तो मकान मालिक और किराएदार की लड़ाई में आग में घी डालने का काम किया ।	**1**
	(ii) **काम तमाम करना** - मार डालना । शेर ने एक ही झटके में हिरन का काम तमाम कर दिया ।	**1**
	खण्ड: 'ग'	
A.6.		
(क)	ख्यूक्रिन की उँगली कुत्ते ने काट खाई थी । अतः उसने दलील दी कि वह एक कामकाजी आदमी है और उसका काम पेचीदा किस्म का है । वह अब एक हफ्ते तक काम करने लायक नहीं है इसी कारण उसे मुआवजा चाहिए ।	**2**
(ख)	शुद्ध सोने में कोई मिलावट नहीं होती जबकि गिन्नी के सोने में ताँबे की मिलावट होती है । शुद्ध सोने की तुलना शुद्ध आदर्श से की गई है । गिन्नी के सोने की तुलना व्यावहारिकता की मिलावट से की गई है ।	**2**
(ग)	वजीर अली ने लगभग पाँच महीने हुकूमत की थी । उसका उद्देश था–अवध को अंग्रेजी संस्कृति के कुप्रभाव से बचाना ।	**1**
A.7.	वज़ीर अली बहुत बहादुर था । वह व्यक्तिगत तौर पर भी वीर और साहसी था । उसके साथी भी बड़े वीर, हिम्मती और जाँबाज थे । उसमें अपने अधिकारों के लिए लड़ने की भावना बहुत बलवती थी । जब उसे अवध के शासन से हटा दिया गया तो वह अपना अधिकार	

	वापस लेने के लिए हर संभव कोशिश करने में जुट गया । वह अंग्रेजों से वार्षिक पेंशन लेकर चुप नहीं बैठ गया । उसने कंपनी सरकार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा । वह इतना स्वाभिमानी था कि कंपनी के गवर्नर जनरल के सामने पेश होना उसे नागवार गुज़रा । इसके लिए उसने वकील से मिलकर पेशी को टालने की कोशिश की । वकील द्वारा खरी-खोटी सुनाने पर उसने वकील की हत्या कर डाली । वह इस हत्या का परिणाम जानता था । फिर भी उसने अंग्रेज़ों के प्रति अपनी घृणा प्रकट करने के लिए बहादुरी का यह काम करके ही दम लिया ।	5
	अथवा	
	कई सालों से बड़े - बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेलकर उसकी जमीन हथिया रहे थे । समंदर के गुस्से की यही वजह थी । जो जितना बड़ा होता है उसे उतना कम गुस्सा आता है परंतु जब आता है तो उसे रोकना मुश्किल हो जाता है । उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया । एक वर्ली के समंदर के किनारे आ गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने और तीसरा गेट - वे - ऑफ इंडिया में आकर औंधे मुँह गिरा ।	5
A.8.		
(क)	पावस ऋतु आने पर प्रकृति के रंग हर क्षण बदलने लगते है । कभी ऐसा लगता है मानो पर्वत हजारों आँखों से तालाब रूपी दर्पण में अपना मुख निहार रहा है । कभी लगता है कि ये झरने पर्वतों का स्तुतिगान कर रहे हैं । कभी लगता है कि पूरा पहाड़ ही बादलों के पंख लगाकर आकाश में उड़ चला है । कभी लगता है कि तालाब जल गया है और उसका धुआँ आकाश में उठ रहा है । इस प्रकार निरंतर जादू भरे खेल चल रहे हैं ।	2
(ख)	पतंगा अपने क्षोभ को इस प्रकार व्यक्त कर रहा है – 'मैं हाय न जल पाया तुझ में मिल ।' वह भी दीपक की लौ में मिलकर जल जाता तो अच्छा होता, पर ऐसा न हो सका ।	2
(ग)	तोप कंपनी बाग के प्रवेश - द्वार पर सँभाल कर रखी गई है ।	1
A.9.	प्रस्तुत कविता में कवि यह मानते हैं कि प्रभु में सब कुछ संभव कर देने की सामर्थ्य है, फिर भी वह यह कतई नहीं चाहता कि वही सब कुछ कर दे । कवि यह कामना करता है कि किसी भी आपद-विपद में, किसी भी द्वंद्व में सफल होने के लिए संघर्ष वह स्वयं करे, प्रभु को कुछ न करना पड़े । फिर आखिर वह अपने प्रभु से चाहते क्या हैं ? वह प्रभु से शक्ति एवं निर्भरता की कामना करता है।	5
	अथवा	
	प्रस्तुत कविता तोप में दो प्रतीकों का चित्रण है । इस कविता से कवि यह याद दिलाना चाहता है कि कभी ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आयी थी । भारत ने उसका स्वागत ही किया था, लेकिन करते-कराते वह हमारी शासक बन बैठी । पर एक दिन ऐसा आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका । तोप को निस्तेज कर दिया	

फिर भी हमें इन प्रतीकों के बहाने याद रखना होगा कि भविष्य में कोई और ऐसी कंपनी यहाँ पाँव न जमाने पाए । इस कविता द्वारा कवि यही संदेश देना चाहता है । **5**

A.10. हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले महंत और उनके पक्षधर थे । आधी रात के आस-पास वे लोग भाला, गंडासा और बंदूक से लैस एकाएक हरिहर के दालान पर आ धमके । इससे पहले कि कोई जवाबी कारवाई हो वे उन्हें लेकर चंपत हो गए । ठाकुरबारी में ले जाकर महंत और चंद विश्वासी साधुओं ने सादे और लिखे कागजों पर जबरन अनपढ़ हरिहर काका के अँगूठे के निशान लिये । पुलिस द्वारा घेर लिये जाने पर वे गुप्त रास्ते से निकल गए । हरिहर काका के हाथ और पाँव बाँधकर, उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया था । इस प्रकार महंत और उसके साथियों ने हरिहर काका के साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया । **5**

अथवा

टोपी को इफ़्फ़न की दादी अपनी माँ के पार्टी की दिखाई दी थी । वह जब इफ़्फ़न के घर जाता तो उसकी दादी के ही पास बैठने की कोशिश करता । दोनों अलग-अलग अधूरे थे । एक ने दूसरे को पूरा कर दिया । दोनों प्यासे थे । एक ने दूसरे की प्यास बुझा दी । टोपी को इफ़्फ़न की दादी से काफ़ी लगाव था । उसे अपनी दादी से अधिक इफ़्फ़न की दादी प्यारी थी । प्रेम का रिश्ता मजहब और जाति से परे होता है । इफ़्फ़न की दादी के देहांत पर टोपी को काफी दुख हुआ और उसने सांत्वना देते हुए कहा कि इफ़्फ़न की दादी की जगह उसकी दादी की मृत्यु हो जाती तो अच्छा होता । इस प्रकार टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे । **5**

खण्ड: 'घ'

A.11.

(क)

कृषि मेला

भारत एक कृषि प्रधान देश है । कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत में कृषि - मेलों का भी आयोजन होता रहता है। कृषि प्रदर्शनी को कृषि मेला' भी कहा जा सकता है । जब भारत परतंत्र था उस समय भारत में खेती-बारी का ढंग बहुत पुराना था - वही पुराने हल और बैलों की जोड़ी । खेती-बारी में पशुओं से हल चलाने, कुएँ से पानी निकालने आदि का काम लिया जाता था । जगह-जगह गाँवों में ''पैंठ' (साप्ताहिक बाजार) लगती थी । 'पैंठ' में दूर-दूर से लोग आते थे और पशुओं का क्रय विक्रय करते थे।

किसानों के लिये कृषि मेलों का आयोजन किया गया था । यह मेला नई दिल्ली के प्रगती मैदान में लगा था । हम मेले के प्रत्येक मंडप में गए । हमने इन मंडपों में अच्छे बीजों, तरह-तरह की खादों, सिंचाई के साधन नलकूप, नये ढंग के कृषि यंत्र ट्रैक्टर आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त की । हमें यह भी बताया गया कि अब सरकार किसानों की कृषि सुधार के लिए हर संभव सुविधा दे रही है । कम व्याज पर, आसान किश्तों पर कृषि यन्त्र खरीदने के लिए धन ऋण के रूप में बैंकों से मिल सकता है । मेले में मनोरंजन के साधनों की कोई कमी नहीं थी। इस तरह हमनें कृषि मेले में जहाँ कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त की, वहाँ मेले

	की चहल-पहल का भी भरपूर आनंद लिया ।	5
(ख)	**वृक्षारोपण** वैज्ञानिक परीक्षणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वृक्षों से मानव को अनेक लाभ हैं । सर्वप्रथम तो वृक्षों से तापमान का नियंत्रण होता है । सूर्य के प्रकाश में वृक्ष अत्यधिक मात्रा में ऑक्सीजन का निर्माण करते हैं जिससे वातावरण शुद्ध होता है । इस कारण वृक्षों की कटाई को रोककर वृक्षारोपण पर जोर देना होगा। कुछ वृक्षों और जड़ी - बूटियों से अमूल्य औषधियों की प्राप्ति होती है । जैसे नीम, तुलसी इत्यादि । वृक्ष की जड़े मिट्टी को बाँधे रखती हैं जिससे बारिश में उपजाऊ मिट्टी बह नहीं पाती । वृक्ष समय पर वर्षा कराने में सहायक होते हैं । प्राचीन समय में तो साधु - संत वृक्षों का उदाहरण देकर हमें नैतिकता की शिक्षा दिया करते थे - जैसे : **''वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखै नदी न संचै नीर ।** **परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर ।।''** इसी प्रकार कहा गया है कि फलों से लदा वृक्ष नीचे की ओर झुकता है उसी प्रकार विद्वान गुणवान व्यक्ति भी सदैव विनम्रता को धारण किए रहता है । वर्तमान समय में सरकार वृक्षारोपण पर बहुत अधिक ध्यान दे रही है । दिल्ली में 'हरित दिल्ली' अभियान भी चलाया जा रहा है । हमें यह समझना होगा कि वृक्ष ही हमारा जीवन है ।	5
(ग)	**पराधीनता** स्वतंत्रता या स्वाधीनता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है । मनुष्य ही क्यों, सृष्टि के प्रत्येक प्राणी को स्वाधीन रहने का अधिकार है । स्वतंत्रता के अभाव में मानव अपना सर्वांगीण विकास नहीं कर सकता । पराधीनता में तो उसके लिए स्वर्ग - नरक में अंतर करना कठिन है । उसके लिए स्वर्ग और नरक में कोई अंतर नहीं । वियोगी हरि के शब्दो में - **''पराधीन जे नर नहीं, स्वर्ग - नरक ता हेतू ।** **पराधीन जे नर, नहीं स्वर्ग - नरक ता हेतू ।''** पराधीन व्यक्ति का अपना किसी प्रकार का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता । उसमें अनेक प्रकार की क्षमताएँ हो सकती हैं किंतु परतंत्र होने के कारण उसे अवसर ही नहीं मिल पाता । वह सदा दूसरों की अनुकंपा पर ही अपना जीवन निर्वाह करता है । उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है । पराधीनता में मनुष्य को परसंचालित मशीन की तरह कार्य करना पड़ता है ।	5
A.12.		
(क)	सेवा में, पोस्टमास्टर महोदय, मुख्य डाकघर, रमेश नगर, नई दिल्ली । **विषय** – मनीऑर्डर न प्राप्त होने के संदर्भ में शिकायत पत्र । मान्यवर,	

निवेदन है कि मैं आपके डाकघर से दिनांक 2 मार्च 2017 को अपने ग्राम बनचारी (जिला फरीदाबाद) हरियाणा को 3000 रु. का मनीआर्डर कराया था । रसीद क्रमांक था डी - 270241 ।

इस मनीआर्डर को कराए हुए एक मास बीत गया है, पर यह अभी तक वहाँ नहीं पहुँचा हैं । वहाँ मेरे परिवारजनों को रुपयों की बहुत आवश्यकता है ।

आपके प्रार्थना है कि मनीआर्डर न पहुँचने का कारण पता लगाकर उसे शीघ्र गंतव्य तक पहुँचाने की कृपा करें ।

सधन्यवाद ।

भवदीय,

रामप्रसाद वर्मा

ए - 50, रमेश नगर, नई दिल्ली ।

दिनांक .....

अथवा **5**

सेवा में,

सहायक निगमायुक्त (पश्चिमी क्षेत्र)

दिल्ली नगर निगम,

राजा गार्डन नई दिल्ली ।

विषय – पार्क का विकास ।

महोदय,

हम रघुवीर नगर के निवासी, आपका ध्यान इस क्षेत्र में पार्क के अभाव की ओर आकर्षित करना चाहते हैं । पच्चीस गज प्लाटवाले मकानों के क्षेत्र में कोई भी पार्क नहीं हैं । यद्यपि बीच में काफी स्थान खाली पड़ा है । इस क्षेत्र के नागरिकों को व्यायाम करने के लिए तथा बच्चो को खेलने के लिए एक पार्क की अत्यंत आवश्यकता है । इस और पहले भी कई बार ध्यान आकर्षित किया गया, पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है ।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि यहाँ शीघ्र ही एक पार्क का विकास करवाएँ । स्थानीय जनता इसमें भरपूर सहयोग देगी । आपकी इस कृपा के लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे ।

धन्यवाद ।

भवदीय,

हरीश रावत

रघुवीर नगर सुधार सभा

दिनांक **5**

A.13. **नवोदय विद्यालय**
जौनपुर
समाज सेवा परिषद

सूचना

हमारे विद्यालय की समाज सेवा परिषद नगर के अनाथ बच्चों के आवास 'बाल ग्राम' में जाकर उनकी स्थिति और आवश्यकता को समझने के लिए एक कार्यक्रम बनाने जा रही है । जो सेवाभावी विद्यार्थी इसमें रुचि रखते हैं वे अपने नाम समाज सेवा परिषद के कार्यालय में 30 अक्टूबर तक दे दें ।

दिनांक : अक्टूबर 15, 2017

राकेश गुप्ता
अध्यक्ष, समाज सेवा समिति **5**

अथवा

सरस्वती उच्च विद्यालय, गाँधी नगर,
लखनऊ
बाल कल्याण परिषद
सूचना

हमारे विद्यालय की बाल कल्याण परिषद पास की झुग्गी झोंपड़ी के गरीब बच्चों की सहायता के लिए अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने जा रही है । ये कक्षाएँ एक मास तक हर रोज शाम 5 से 7 तक लगेंगी । इनमें पढ़ाई के दौरान बच्चों को आने वाली समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न किया जाएगा । इस पुण्य कार्य के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ आगे आना चाहते हैं, वे आपने नाम 30 नवंबर तक बाल कल्याण परिषद के कार्यालय में जमा करवा दें।

दिनांक : 10.10.2017

आशीष जाधव
सचिव, बाल कल्याण परिषद **5**

A.14.

राधिका – हाय सुरेखा! कैसी हो?
सुरेखा – मैं अच्छी हूँ, तू कैसी है?
राधिका – मैं भी अच्छी हूँ ।
सुरेखा – सुना है दिन-रात किताबों के पीछे हाथ धोकर पड़ी रहती है ।
राधिका – कहाँ पढ़ रही हूँ ? मेरे पिताजी कहते हैं, ऐसे घूमती रही तो डॉक्टर तो क्या मास्टरनी भी नहीं बन पाएगी ।
सुरेखा – अच्छा! क्या मास्टरनी ऐसे ही बन जाती हैं?
राधिका – भाई, डॉक्टरी के लिए तो अधिक मेहनत करनी ही पड़ती है!
सुरेखा – तो क्या मैं मेहनत करना छोड़ दूँ! मुझे तो अध्यापिका बनना है ।
राधिका – भई तू ठहरी समाज-सेविका! तुझे तो लोगों का चरित्र सुधारना है । इसलिए तू बनेगी तो आदर्श अध्यापिका बनेगी । तू कैसे मेहनत करना छोड़ेगी?
सुरेखा – सच कहूँ! ये दोनों ही काम सेवा के हैं । डॉक्टर तन की देखभाल करता है

तो अध्यापक मन और बुद्धि की ।

राधिका – क्यों, क्या डॉक्टर बिगड़ी हुई बुद्धि वाले मरीज़ों का इलाज नहीं करते ?

सुरेखा – डॉक्टर तो बिगड़ने पर इलाज करते हैं । परंतु अध्यापक उन्हें बिगड़ने ही नहीं देते । वे उन्हें संस्कार देते हैं ।

राधिका – सच, अध्यापक का दर्जा ईश्वर के बराबर होता है ।

सुरेखा – और डॉक्टर! वह संकट में ईश्वर का अवतार प्रतीत होता है!

राधिका – तो फिर, हम दोनों ही ईश्वर के दूत बनकर काम करेंगे क्यों ?

सुरेखा – हाँ, अगर हर आदमी अपने काम को ईश्वर का काम मानकर करे तो वह काम पवित्र हो जाता है । **5**

अथवा

अखिलेश – हलो राजेंद्र! बधाई हो!

राजेंद्र – धन्यवाद!

अखिलेश – पूरे बोर्ड में प्रथम आकर तूने कमाल कर दिया या! बहुत बधाई!

राजेंद्र – धन्यवाद अखिलेश! मुझे सचमुच खुद विश्वास नहीं हो रहा ।

अखिलेश – परंतु मुझे खुशी है कि मेरा विश्वास आज सच हो गया! मैं कहा करता था न कि एक-न-एक दिन तू कोई कारनामा ज़रूर करेगा ।

राजेंद्र – बस यह तेरे जैसे दोस्तों और भला चाहने वालों की दुआएँ हैं । वरना मैं किस योग्य हूँ!

अखिलेश – यही! यही तो बात मुझे तेरा दीवाना बना देती है । तुझमें जो विनम्रता है, मैं इसका कायल हूँ ।

राजेंद्र – भाई अखिलेश! मैं जानता हूँ! मेरे से योग्य कितने ही लड़के-लड़कियाँ और हैं । मेरा भाग्य है कि मैं प्रथम आ गया । कई लड़के-लड़कियाँ दो-दो नंबरों से मेरे पीछे हैं ।

अखिलेश – भगवान करे! तू यशस्वी बने । माता-पिता को मेरी ओर से बधाई देना!

राजेंद्र – ज़रूर-ज़रूर ।

अखिलेश – अरे यह तो बता! मिठाई कब खिलाएगा ?

राजेंद्र – जब तेरे पास वक्त हो । अभी चल!

अखिलेश – चल! खाने के लिए तो मैं तैयार ही रहता हूँ । **5**

A.15.

स्वर्णिम भविष्य की दस्तक!

सरस्वती विद्यालय

जी.टी. रोड, अंबाला

केवल कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों के लिए

- व्यक्तित्व विकास की सभी आधुनिक सुविधाएँ!
- आधुनिक प्रयोगशालाएँ!
- इंडोर तथा आउटडोर खेलों का प्रबंध!
- संगीत, नृत्य, संभाषण हर छात्र के लिए आवश्यक!
- राष्ट्रीय प्रतिभाओं के साथ संपर्क को प्रोत्याहन!

अवसर मत चूकिए!

केवल 100-100 सीटें!

प्रवेश साक्षात्कार और 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर!

निदेशक

मोहन पवार

संपर्क : 9892345679 **5**

अथवा

विश्वास नहीं होता!
एक लीटर पेट्रोल में

सचमुच अविश्वसनीय!
किंतु सच

आस्था स्कूटी

आज ही लाइए
पेट्रोल की बचत कीजिए!
नई तकनीक, नया डिजाइन, नए रंग, मोहक स्टाइल!

कार्यालय पता: 300, इंडस्ट्रियल स्टेट, पंजाब । **मोबाइल** : 07723456710 **5**

❖❖❖❖